The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# फणीश्वरनाथ रेणु का अन्तर्मन एवं आंचलिकता

**बीरेन्द्र कुमार**

शोधार्थी, हिन्दी विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ,

ईमेल -09virendrakumar@gmail.com

**DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17130060**

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**

**Accepted:** 25-08-2025

**Published:** 10-09-2025

**Keywords:**

*आंचलिकता, पराकाष्ठा, मिरदंग, दिवास्वप्न, खम्हार, पूर्वदीप्ति,*

**ABSTRACT**

'आंचलिकता की परिपाटी को शनैः शनैः साहित्य के पथ पर अग्रसर कर राष्ट्र के हृदय में ठहराव लिए छोटे-छोटे कस्बों,गाँवों,देहातों के गली कूचों की मिट्टी की सोंधी खुशबू से सराबोर कर देने वाली,आंचलिक विधाओं की आत्मा में वास करने वाले साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु ने दीर्घ विधाओं जैसे- उपन्यास,कहानी,नाटक,के साथ ही साथ लघु विधाओं (संस्मरण,रिपोर्ताज, रेखाचित्र,आत्मकथा) में भी आंचलिकता के भाव को ज्वलन्त दृश्यों के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने में महती भूमिका निभाई है, इन्होंने अपने आंचलिक उपन्यास 'मैला आंचल' में अपनी जन्मभूमि पूर्णिया (बिहार) के साथ-साथ पड़ोसी देश नेपाल,पाकिस्तान,में व्याप्त राजनीतिक,सामाजिक संघर्षों एवं स्थितियों एवं पश्चिम बंगाल के अंचलों का बड़ा ही मार्मिक दृश्य प्रस्तुत किया है। वह 'मैला आंचल' उपन्यास में स्वयं लिखते हैं कि "मैंने इस के एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर इस उपन्यास कथा का क्षेत्र बनाया है।" यही कारण है कि उनका 'मेरीगंज' श्रीलाल शुक्ल के 'शिवपालगंज' और प्रेमचंद के गांव की भांति भारत का प्रतिनिधि अंचल बन जाता है। आगे के क्रम में लघु विधा की तरफ जब लेखक अग्रसर होता है,तो इस क्षेत्र में भी संघर्षों की एक गाथा लिखता जाता है। जैसे 'रिपोर्ताज' **'ऋणजल-धनजल'** में 1966 का सूखा तथा 1975 के बिहार के बाढ़ के दो अलग-अलग विपरीत दृश्यों का वर्णन,लेखक की लेखनी का ही चमत्कृत रूप है। जिसमें रेणु जी ने बाढ़ के ऐतिहासिक दृश्यों एवं उसके बाद होने वाले संघर्षों एवं दुश्वारियों को रेखांकित किया है

**मूल आलेख :-**

साहित्य अन्तर्मन का दर्पण होता है,हम कोरे पृष्ठों पर मन के भावों को जैसे-जैसे उत्कीर्ण करते जाते है,वह अपने स्वरूप को विकसित करता जाता है। लेखक 'मैला आंचल' के प्रथम संस्करण की भूमिका में लिखता है, "यह है 'मैला आंचल' एक

आंचलिक उपन्यास । कथानक है पूर्णिया । पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है; इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल। विभिन्न सीमा रेखाओं से इसकी बनावट मुकम्मल हो जाती है, जब हम दक्खिन में संथाल परगना और पश्चिम में मिथिला की सीमाएँ खींच देते है।मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकर इस उपन्यास कथा का क्षेत्र बनाया है,' इसमें फूल भी है शूल भी; धूल भी है गुलाब भी; कीचड़ भी है,चन्दन भी, सुन्दरता भी है कुरूपता भी; मैं किसी से भी दामन बचाकर निकल नहीं पाया। "

इस प्रकार प्रथम संस्करण की भूमिका पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर लेखक ने अपने अन्तर्मन के आंचलिक भावों को खोलकर रख दिया है, यह कोई आश्चर्य का विषय नहीं है कि लेखक ने अंचल की गूढ़ता को अपनी दृष्टि में शीर्ष बिन्दु पर पहुंचा दिया है। साहित्यिक क्षेत्र किसी तपोभूमि से कम नहीं होता, जहाँ एक लेखक स्वयं को विषयों के अनुरूप ढालकर, नवीन सृजन को एक स्वरूप प्रदान करता है। इसी क्रम में उपन्यास **'मैला आंचल'** के प्रथम खंड के प्रथम दृश्य (बिन्दु) से ही आंचलिकता के भाव को महसूस किया जा सकता है। गाँव का दृश्य है, अंग्रेजियत का बोलबाला, बहरा चेथरु गिरफ्तार हुआ है, अन्यान्य खबरें । कथाक्रम के अगले बिन्दुओं में मेरीगंज जैसे अंचल और अनेक प्रकार के टोले, एवं कस्बों का वर्णन (जैसे- ततमाटोली,कायस्थटोली,कैथटोली,राजपूत टोली,गुअरटोली,मठ व मैके साहब की कोठी) किया गया है। यह उपन्यास बिन्दुवार पात्रों को प्रदर्शित करते हुए आगे बढ़ता है।

प्रथम खंड के बिन्दु 6 से अंतिम बिन्दु 44 तक अलग-अलग परिवेशों में कथा क्रम आगे बढ़ता जाता है। छठे दृश्य में बालदेव नामक पात्र अपने जीवन के फ्लैश बैक में पहुँचता है, आगे के क्रम में प्यारू और डागडर साहेब की झलक प्रस्तुत हुई है। पुनः लक्ष्मी व मठ का परिवेश है, डॉक्टर प्रशान्त की आपबीती का जिक्र, डॉक्टर द्वारा ममता को पत्र भेजना, सदाब्रिज का किस्सागो, नये महन्त का चुनाव, गाँव के ग्रह अच्छे नहीं, गाडीवानों का दल, सुमरितदास के ऊपर पटाक्षेप, बालदेव कपड़े की पुर्जी बाँट रहे, आचारजगुरु का कासी से आगमन, डागडर बाबू का ईलाज, सोशलिस्ट पार्टी की सभा, कमली द्वारा डॉक्टर को पत्र लिखना, मनचला सहदेव मिसर,मठ,महँगाई,अकाल,पर्व एवं त्योहार, बावन दास, डाक्टर की जिन्दगी का नया अध्याय, डॉक्टर की तारीफ, सिरवा पर्व, डॉक्टर के कारनामे, विश्वनाथ प्रसाद व पंचायत, आषाढ़ के बादल, संथालों पर आक्षेप, कोर्ट, कचेहरी व थानेदारी,कार्यवाही,हरगौरी का दाह संस्कार,मठ,डॉक्टर और मौसी।

इस प्रकार से कथाक्रम के परिवेशों में बदलाव होता जाता है, तथा प्रथम खंड का इन 44 बिन्दुओं के साथ समापन हो जाता है। इस उपन्यास के आगे के क्रम के संदर्भ में **'नामवर सिंह'** लिखते है, "मैला आंचल ' एक अंचल का महाकाव्य है। इसमें मिथिला की धरती, लोग, बोली, रीति-नीति सब कुछ जीवित हो उठते हैं।"

दूसरे खंड का प्रथम दृश्य या बिन्दु प्रारंभ होता है। सुराज मिल गया, मुकदमा एवं सुराज, आक्षेप- खबरदार! गरम जलेबी मत खाना, नारेबाजी, बावनदास, तन्त्रिमा टोली में घमाघम पंचायत, कमली व डॉक्टर, जोतखी काका, लक्ष्मी दासिन व मठ, गिरफ्तारी, कमली के माँ की पुकार, चम्पापुर की ड्योढ़ी, रामकिसुन आसरम, अपने दोमंजिले छत पर तहसीलदार साहब, बालदेव जी का टैन सफर, डॉक्टर नजरबंद, कालीचरन का जेल वास, हसलगंज हाट, जोतखी काका का घर, मठ, मेरीगंज गाँव व विश्वनाथ मल्लिक का खम्हार,1948 साल के अप्रैल की एक सुबह, तहसीलदार साहब का घर एवं नशे की लत ।

दूसरे खंड के इन 23 छोटे बड़े बिन्दुओं में लेखक ने अंचल की आंचलिकता को बड़े ही मनोरम रूप से समावेशित किया है। जहाँ परिवेश की अदला बदली में मनोभावों का उतार-चढ़ाव बखूबी रूप से देखा जा सकता है। लेखक ने मेरीगंज जैसे छोटे से गाँव को केन्द्र बनाकर आंचलिकता के तत्व को इसमें पिरो दिया है। इस परिप्रेक्ष्य में **डॉ. नामवर सिंह** का कथन सार्थक प्रतीत होता है -" मैला आंचल स्वतंत्रता के बाद के ग्रामीण समाज का यथार्थ दस्तावेज है। इसमें गाँव का जीवन अपनी समस्त जटिलताओं और अंतर्विरोधों के साथ उपस्थित है।"

'**परती परिकथा** : - इस उपन्यास में रेणु जी ने पूर्णिया जिले के परानपुर गाँव की कथा को लिया है। जिसका कथा समय 1953 ई. से 1956 ई० तक का है। इस उपन्यास में रेणु ने परती जमीन पर बसे हुए लोगों के जीवन और संघर्षों को चित्रित किया है। 'परती-परिकथा' में "कृषि-संस्कृति, प्रकृति और भूमिहीन किसान की त्रासदी" मार्मिक रूप से चित्रित है। उपन्यास का शीर्षक 'परती' बंजर भूमि को संकेत करता है —यह ना केवल ज़मीनी उपेक्षा, बल्कि मनुष्यों की टूटती उम्मीदों की ओर भी इशारा करता है। इसी के परिप्रेक्ष्य में **'नामवर सिंह'** कहते है - "रेणु का आंचलिकता-बोध केवल दृश्य और भाषा तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें उस अंचल की आत्मा और संस्कृति का स्पंदन है। परती परिकथा में रेणु ने गाँव और भूमि को एक जीवित चरित्र बना दिया है।"

इसी तथ्य के क्रम में **'मैनेजर पांडेय,** के कथन पर भी प्रकाश डाला जा सकता है जैसा कि उन्होंने कहा है- "रेणु ने मैला आँचल और परती परिकथा दोनों उपन्यासों में गाँव को केंद्र में रखकर भारतीय लोकतंत्र की जड़ों और उसकी कठिनाइयों को रेखांकित किया है। परती भूमि यहाँ केवल बंजर खेत ही नहीं, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक ठहराव का भी प्रतीक है "

'**दीर्घतपा** : - उपन्यास का कथाकेन्द्र पटना जिले का वर्किंग वीमेंस हॉस्टल है। इसमें छात्रावास के भीतर के भ्रष्टाचार, स्त्रियों के दैहिक शोषण की कथा कही गई है। बेलागुप्त इस उपन्यास की केन्द्रिय पात्र है।

**'जुलूस : -** उपन्यास में पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित होकर, बिहार के पूर्णिया जिले में आये हुए हिन्दू शरणार्थियों की दारुण कथा का वर्णन है। यह उपन्यास शरणार्थियों की समस्या और उनके पुनर्वास की कहानी कहता है।

**'कितने चौराहे :-** इस उपन्यास में आजादी के लिए संघर्ष करने और अपना बलिदान देने वाले युवकों को केन्द्र में रखकर लिखा गया है, उपन्यास में इन युवकों में देश-प्रेम, सेवाभाव, त्याग आदि आदर्शों को स्थापित करने का प्रयास हुआ है । यह उपन्यास स्वतन्त्रता संग्राम और उसके बाद के समय में गाँव के लोगों के जीवन को दर्शाता है।

**'पलटू बाबू रोड :-** यह उपन्यास रेणु के मृत्यु के पश्चात् प्रकाशित हुआ था। इसमें 'पलटू बाबू रोड 'कस्बें एवं बंगाली परिवार के चारित्रिक पतन की कहानी कही गई है। यह उपन्यास एक अलग तरह की कहानी कहता है, जिसमें एक व्यक्ति अपने जीवन में कई चुनौतियों का सामना करता है। आंचलिक उपन्यास अपनी संरचना में अन्य उपन्यासों से काफी अलग होता है। इसमें नायक कोई पात्र न होकर 'अंचल, ही नायक होता है। इसका उद्देश्य अंचल का बहुआयामी व जीवंत चित्र प्रस्तुत करना होता है। जैसे "लट्टू बाबू ने सारे बैरगाछी सब-डिवीजन की चौहद्दी देख ली, मन के पर्दे पर । ... उत्तर नेपाल की सीमा। नेपाल की सीमा का अर्थ - नमक ,कपड़ा किरासन तेल, चीनी और सीमेंट की दसगुनी कीमत। पूरब बंगाल की सीमा ।"

प्रेमचंदोत्तर युग में फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास मैला आँचल का प्रकाशन एक महत्वपूर्ण घटना है क्योंकि यहीं से एक नई व मौलिक प्रवृत्ति आंचलिक उपन्यास के रूप में शुरू हुई। आंचलिक परिवेश को अपने उपन्यासों में सम्मिलित करने के परिप्रेक्ष्य में रेणु जी सफल सिद्ध हुए है।

कहानियों के सन्दर्भ में फणीश्वरनाथ रेणु ' का स्वयं का कथन दृष्टव्य है - "मेरी प्रिय कहानियां' पुस्तक माला के अन्तर्गत संकलित इन नौ कहानियों (रसप्रिया, तीसरी कसम अर्थात मारे गये गुलफ़ाम, लाल पान की बेगम,संवदिया,एक आदिम रात्रि की महक,जलवा,आत्म-साक्षी, अगिनखोर,रेखाएँ:वृत्तचक्र) के अलावा मेरी अन्य कहानियाँ मुझे तनिक भी अप्रिय नहीं। अपनी कोई रचना मुझे अप्रिय नहीं लगी... नहीं लगती। मेरे अशिक्षित कथाकार के लिए अपनी रचनाओं की लम्बी भूमिका बहुत ही कठिन और अप्रिय लेखन है। अपनी कहानियों में मैं अपने को ही ढूँढता फिरता हूँ: अपने को 'अर्थात आदमी को। ईमान से, धरम से जो कह रहा हूँ, सच कह रहा हूँ। कि जो लिखा है सो झूठ लिखा है, यानी इस कहानी के सभी स्थान, पात्र, और घटनाएँ सरासर कपोल कल्पित है।...कि किसी राष्ट्र, देश,धर्म,जाति सम्प्रदाय,समाज,पार्टी,वर्ग या व्यक्ति विशेष के विरुद्ध घृणा या विद्वेष फैलाने के उद्देश्य से यह कहानी नहीं लिखी गई है।"

रेणु जी की आंचलिक कहानियों में 'रसप्रिया' लाल पान की बेगम, संवदिया, एक आदिम रात्रि की महक'अच्छे आदमी, ठेस, भित्तिचित्र की मयूरी, तीसरी कसम अर्थात मारे गये गुलफाम, पंचलाइट आदि सम्मिलित है। आंचलिकता के परिवेश में लिखी गई कहानी 'रसप्रिया, जो गाँव के खेतों, मैदानों, बाग-बगीचों और गाय-बैलों के परिवेश में प्रारम्भ होती है तथा मोहना और पंचकौड़ी मिरदंगिया के रसपिरिया बजाने के सम्बंध को लेकर आगे बढ़ती है तथा परमानपुर, कमलपुर,सहरसा और पूर्णिया, फारबिसगंज आदि अंचलों की झलक प्रस्तुत करते हुए कथाक्रम आगे बढ़ चलती है।

**"तीसरी क़सम, अर्थात् मारे गये गुलफ़ाम** – इस कहानी का प्रारम्भ पूर्वदीप्ति (फ्लैश बैक) पद्धति के साथ होता है। गाड़ीवान हीरामन के पीठ में गुदगुदी लग रही है,वह अपने जीवन के 20 वर्ष के समय अन्तराल के फ्लैश बैक में जाता है तथा लदनी के विषय में सोचता है, जोगबनी में विराट नगर, फारबिसगंज, महाजन का मुनीम, पुलिस दारोगा, अंत में " चलो भैयन, जान बचेगी तो ऐसी-ऐसी सग्गड़ गाड़ी बहुत मिलेगी।.... एक-दो-तीन ! नौ-दो ग्यारह। " जंगल, नदी नाले से होते हुए वह किस प्रकार से घर पहुंचा था और दो कसमें खाई थी –"चोर बाजारी का माल नहीं लादेंगे, दूसरी – बाँस की लदनी कभी नहीं करेंगे। " इन दो कसम को संजोकर रखते हुए उसे बीस वर्ष गुजर गये।

इस कहानी में आंचलिक परिवेश की बात की जाये तो इसके क्रम में खरैहिया शहर, चंपानगर, फारबिसगंज, मेलों की लदनी का दृश्य, सिंधिया गाँव,छत्तापुर-पचीरा,विसनपुर,कजरी नदी, सिरपुर बाजार, कुड़मागाम, हरिपुर, ननकपुर, परमान नदी, मीना बाज़ार, आदि छोटे बड़े अंचलों के मनोहर दृश्यों को लेखक ने अपने कथ्य के अन्तर्गत तराशा है। तथा तीसरी कसम " कंपनी (नौटंकी) की औरत की लदनी कभी नहीं करेगा। " के साथ ही बिछुडन की मनोदशा को हीरामन के हृदय में प्रवेश करा कर यह कहानी समाप्त हो जाती है।

**'लाल पान की बेगम,** कहानी का आंचलिक परिवेश एक छोटे से गाँव एक छोटे से घर के आंगन से शुरू होती है तथा गाँव के अड़ोस-पड़ोस से मुलाकात करती हुई बलरामपुर का नाच दिखा लाने तक चली जाती है। आगे रेलवे स्टेशन की तरफ

इशारा, कुर्मा टोली को इंगित करना, कोयरी टोले मलदहिया टोली,मोहनपुर होटिल-बँगला, सिमराहा के सरकारी कूप का दृश्य तथा अंतिम दृश्य बैलगाड़ी पर सवार होकर ग्रामवासियों का अपने धान के खेत से होकर चाँदनी रात में गुजरना, खेतों से धान के झरते फूलों की गंध, बाँस की झाड़ी में कही दुद्धी की लता का फूलना आदि दृश्य आंचलिकता के तथ्य को परिपूर्ण बनाते है।

जब लेखक लघु विधा की तरफ अग्रसर होता है तो इस क्षेत्र में भी संघर्षो की एक गाथा लिखता जाता है। जैसे 'रिपोर्ताज' **'ऋणजल-धनजल '** में 1966 का सूखा तथा 1975 के बिहार के बाढ़ के दो अलग- अलग विपरीत दृश्यों का वर्णन,लेखक की लेखनी का ही चमत्कृत रूप है। जिसमें रेणु जी ने बाढ़ के ऐतिहासिक दृश्यों एवं उसके बाद होने वाले संघर्षो एवं दुश्वारियों को रेखांकित किया है,कि कैसे चंद दिवस में एक 'जल सैलाब' जन सैलाब के' आधे से अधिक उम्र की कमाई छीन ले जाती है, अवशेषों के मलबों में दबी हुई मानवता स्वयं को बचते बचाते हुए कैसे सूखे का भेंट चढ़कर मस्तिष्क में पनप रहे दिवास्वप्न को सुखाकर चूर-चूर कर जाती है।

जैसे- 'अब मैं दौड़कर छत पर चला गया। चारों ओर शोर, कोलाहल–कलरव, चीख-पुकार और पानी का कलरव। लहरों का नर्त्तन।

रेणु जी की यह कृति कई दृष्टियों में ऐतिहासिक महत्व रखती है। जहां तक बिहार के वर्तमान स्थिति की बात की जाये तो इस रिपोर्ताज में दर्शाये गये दो विपरीत पक्षों (बाढ़ एवं सूखा) में से द्वितीय स्थिति (सूखा) से इस अंचल को भले ही कुछ राहत मिली हो, परन्तु प्रथम स्थिति (बाढ़) आज भी अपने सिद्धान्तों पर खरी उतर रही है, कहने का तात्पर्य है कि कोसी का उफान आज भी अपने चरम बिन्दु पर है, नदियों के नामों में परिवर्तन भले ही हो गया हो परन्तु स्थिति यथावत ही बनी हुई है।

फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में **आंचलिकता** उनकी रचनात्मक पहचान का मूल तत्व है। रेणु ने हिंदी कथा साहित्य को गाँव, किसान, खेत-खलिहान,लोकगीत,बोली-बानी और ग्रामीण जीवन की संस्कृति से जोड़कर एक नया आयाम दिया। उनके साहित्य में आंचलिकता केवल भौगोलिक सीमा का चित्रण नहीं है, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन, लोकविश्वास,बोली,लोकगीत,लोककथाएँ और जनजीवन की जीवंत प्रस्तुति है। आंचलिकता का अर्थ है किसी विशेष क्षेत्र (आंचल) की जीवन-शैली, संस्कृति,भाषा,परंपराओं,लोकगीतों,लोककथाओं और जनमानस को साहित्य में उतारना। रेणु ने हिंदी कथा साहित्य को महज शहरी अनुभवों तक सीमित नहीं रखा, बल्कि बिहार के कोसी अंचल (पूर्णिया,अररिया,माधेपुरा क्षेत्र) को अपनी कहानियों और उपन्यासों में जीवंत किया । उन्होंने मैथिली, भोजपुरी,मगही,अंगिका आदि बोलियों का प्रयोग कर पात्रों को यथार्थ बनाया । "मैला आँचल" में बोली और खड़ी बोली का अद्भुत मेल दिखाई देता है। जैसे –"यह आजादी झूठी है !"

"देश की जनता भूखी है।" यह नया लारा कौन लगाता है ?

"ऐ ! ऐ ! नहीं हुआ।"

लोकगीत,नृत्य,पर्व-त्योहार,लोकविश्वास,ग्रामीण रीति-रिवाज उनके साहित्य में बार-बार आते हैं। 'मैला आँचल' और 'परती परिकथा' में विवाह, जनेऊ,पर्व-त्योहार,लोकविश्वास का चित्रण है। किसानों की गरीबी, बाढ़-दुख, सामंती शोषण, ग्रामीण

राजनीति, जातीय संघर्ष उनके साहित्य के मूल विषय हैं। उन्होंने ग्रामीण जीवन की व्यथा और हर्ष को बिना आडंबर के सजीव रूप दिया।

रेणु की कहानियाँ और उपन्यास गाँव के खेतपक-पशु ,बगीचे ,नदी ,खलिहान-ृषी और ग्रामीण परिवेश की सौंधी महक से भरे हैं। प्रकृति पात्रों के जीवन से जुड़कर आती है। रेणु ने केवल क्षेत्र विशेष का वर्णन नहीं कियाबल्कि उसे , **भारतीय जनजीवन का प्रतीक** बना दिया। उनका आंचलिक चित्रण स्थानीय होते हुए भी सार्वभौमिक संवेदनाओं को व्यक्त करता है। वे लोकभाषा और लोकसंस्कृति को साहित्य में स्थान देकर "आंचलिक उपन्यासकार" कहलाए।

**निष्कर्ष :-**

रेणु जी का लेखन कौशल उपन्यास, कहानियों के मार्ग से होते हुए कब लघु विधाओं की तरफ बढ़कर दो विपरीत धाराओं का रूप ले लेता है, पता ही नहीं चलता है। उनके दीर्घ विधाओं में अंचल स्वयं एक नायक के रूप में स्थितियों का जायजा लेते हुए दिखाई पड़ता है। बात चाहे उपन्यासों की हो या कहानियों की या अन्य विधा, रेणु जी की पैनी दृष्टि हर एक छोटे स्थानों और आंचलिक परिवेशों पर रही है,वह हर एक छोटे बड़े घटनाओं और दुर्घटनाओं को प्रिय पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत कर देना चाहते है। यह उनके लेखनी का कौशल ही है कि यदि वे मैला आंचल के मार्ग पर चलते है तो उसमें विद्यमान छोटे-छोटे पगडंडियों को निहारते जाते है। आगे 'परती परिकथा'दीर्घतपा,जुलूस या अन्यान्य लघु-दीर्घ विधाओं में आंचलिकता का समावेश ऐसे करते है, जैसे कि उन्होंने सम्पूर्ण वृत्तांत अपने चक्षुओं से देख परख कर उसका वर्णन किया हो।

**सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-**


1. रेणु) .फणीश्वरनाथ ,1954भूमिका ,प्रथम संस्करण ,राजकमल प्रकाशन :दिल्ली .मैला आंचल (
2. वहीप्रथम संस्करण ,.(भूमिका से) .
3. सिंहनामवर ,.आधुनिक हिंदी साहित्य की प्रवृत्तियाँ.राजकमल प्रकाशन .पृष्ठ ,212
4. सिंहनामवर ,.कहानी नयी कहानी (आलोचना ग्रंथ).राजकमल प्रकाशन .पृष्ठ ,नई दिल्ली ,168.
5. वही, पृ० -175
6. पांडेय, मैनेजर. हिंदी उपन्यास का विकास.लोकभारती प्रकाशन .पृष्ठ ,189
7. रेणु, फणीश्वरनाथ. (2024). मेरी प्रिय कहानियाँ. दिल्ली: राजपाल एण्ड सन्ज प्रकाशन ,(भूमिका से)
8. वही०पृ,- 22
9. वही०पृ,- 23
10. वही०पृ ,- 50